अंतरा-शब्दशक्ति

मै अपराजिता

छंदमुक्त काव्य संग्रह

पिंकी परुथी ''अनामिका''

मैं अपराजिता...

(काव्य संग्रह)

पिंकी परुथी "अनामिका"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-88102-79-7"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म,प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म,प्र,) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या,) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail,com

अंतरताना- www,antrashabdshakti,com

प्रथम संस्करण २०१८ - पिंकी परुथी "अनामिका"

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Main Aparajita By Pinky Paruthy 'Anamika'

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मैं अपराजिता...

१ अप्रैल २०१७ प्रिय डॉ प्रीति सुराना जी से पहली बार व्हाट्स ऐप पर पहला संवाद सन्देश द्वारा, यह ही वह पहला दिन था जब से मैंने स्वयं के अन्दर बदलाव को पहचाना, आत्मविश्वास अपने लेखन और विचारों के प्रति बढ़ने लगा, एक डर अनिश्चितता का और अनुभवहीनता का वह भी धीरे धीरे खत्म होने लगा, और सबसे महत्वपूर्ण बात कि तब से अब तक जो मित्रों का समाज विस्तारित हुआ वह सब उस परी की वजह से ही हुआ,..।

अरे मेरी परी यानि प्रीति जी,.. ईश्वर उन्हें अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करें, हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए समर्पित, नारी उत्थान के लिए क्रियाशील, हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए प्रतिबद्ध, मृदुल व्यवहार और जुझारू महिला होने के कारण उन्हें लौह व्यक्तित्व भी कहा जा सकता है। मैं अपने परिवार, माता पिता, भाई बहन, पति, पुत्र, पुत्री और मित्रों को, साथ ही प्रिय प्रीति जी को यह पुस्तक सादर समर्पित करती हूँ,... अपने लेखन के माध्यम से यदि किसी का हृदय परिवर्तन कर पाऊँ, समाज की धारा को सही दिशा दे पाऊँ, प्रेम और शान्ति स्थापित कर पाऊँ, भक्ति में लीन रह पाऊँ तो

लेखनी सार्थक हो जाएगी, और अनेकों कष्टों, संतापों, खुशियों में भी सम रह जाऊँ तो बन सकती हूँ "मैं अपराजिता......।" आप भी.......।

अन्तरा-शब्दशक्ति परिवार के सभी मित्रों का विशेष अभिनन्दन, आप सभी का स्नेह और प्यार और सम्मान प्राप्त करके मैं असीम ऊर्जा का अनुभव करती हूँ। रचनाओं को पढ़कर निष्पक्ष राय की प्रतीक्षा में, आशीर्वाद की आकांक्षी-

पिंकी परुथी "अनामिका"

अनुक्रमणिका

1. मैं अपराजिता..	7
2. नीर	8
3. तूफान	9
4. डुबकी	10
5. ओढ़नी का सिरा	11
6. उस्ताद	12
7. प्रेम में..	13
8. मसखरा	14
9. ईदगाह	15
10. वो चादर..	16
11. कोई तो इलाज होगा..	17
12. रिश्तों के दरमियान..	18
13. माफ़ करना..	19
14. कारे बदरा	20
15. कैसे माफ़ करूँ?	21

16. ख़ुशी के गीत 22

17. इबादत 23

18. प्रेम है या.. 24

19. कुछ सुना??? 25

20. सूना सूना कोना 26

21. सराहना 27

22. भाग्य 28

23. दीवार 29

24. प्रस्फुटन 30

25. ताकत 31

26. वो दृश्य... 32

मैं अपराजिता...

जीवन संघर्ष,..
जय पराजय,..
अंतर्द्वंद्व,..
अपरिमित परीक्षाएँ,..
कर्त्तव्यबोध,..
समर्पण,..
देहाभास,..
स्वीकारोक्ति,..
प्रेम बंधन,..
प्रेम पाश,..
जीवन चक्र,..
ममता,..
मैत्री,..
पालन पोषण,..
धर्म,..
सेवा,..
मोक्ष,..
अग्रसर,..
मैं अपराजिता.....!

नीर

यूँ ही
देख लिया हमने,
पत्थर होते हुए उन सम्बन्धों को,
पर्वत शिखर पर बैठ जो,
मोहित हो स्वयं से ही।
अभिमानित,
अट्टहास की गूँज ,
प्रतिध्वनि देती तो है,
पर सुनने को,
आनन्दित होने को ,
कोई नहीं है वहाँ।
रक्त की उष्णता ठिठक गई।
आर्द्रता और तापमान की कमी से,
रंग भी फीका पड़ गया,
बन गया जैसे,
चट्टानों से रिसता हुआ नीर।
कभी झरने की भाँति बहकर,
आनन्दित करता था जो मन उपवन।
आज बूँद बूँद बहकर,
गिरते ही सूख जाता है।
कभी तो परिवर्तित होगा,
चट्टान का स्वरूप,
पत्थर में, गिट्टी में,
मिट्टी में या रेत में।
और नए स्वरूप में ,
शायद प्रवाहित हो,
नीर के बदले रक्त।

तूफान

सुनो,
तुम्हें नहीं पता,
तुम्हारे जाने के बाद,
उसे धोखा कहूँ
तो मैं अपने विचारों को नीचे गिराती हूँ,
खैर,
ऐसा लगा जैसे कोई भयंकर तूफान,
आ गया हो ज़िन्दगी में।
तूफान भी ऐसा जो थमने का नाम नहीं ले।
पर ऐसा कभी नहीं होता,
तूफान का असर, दायरा, समय ,
सब निश्चित ही होता है,
यही सोचकर मैं रुकी नहीं,
गति जरूर धीमी कर ली,
पर,
हाँ रुकी नहीं।
बल्कि उस तूफान के बाद,
रास्ते और साफ़ नज़र आए।
रुकती तो,
यूँ ही,
बवन्डर में खुद को मिटा देती।
अब वहाँ हूँ जहाँ सोचा ही नहीं,
अपने वजूद की अहमियत के साथ इज्ज़त से।
शुक्रिया उस तूफान का,
मेरी ज़िन्दगी में लाने के लिए।

डुबकी

हाँ!
मैंने,
डुबकी लगाई है,
ग़मों के समुन्दर में,
बहुत गहराई तक।
लापरवाह सी हो चुकी हूँ, कि,
आएँ कितने भी ग़म,
अब ना डूबा पाएँगे,
वजूद को मेरे।
हाँ,
बात ये ज़रूर है कि,
फर्क नहीं पड़ता,
अब,
खुशियाँ आएँ ,
चाहे हज़ार,
या दे जाएँ,
सिर्फ दस्तक ज़रा सी।
हाँ,
लापरवाह सी हो चुकी हूँ मैं अब।

ओढ़नी का सिरा

भिगो के,
ओढ़नी का सिरा,
लटकता है,
सूख जाता है।
वो सिरा जाने क्यों,
फिर भीग जाता है?

हँसी, ठिठोली,
और
आसपास की खिलखिलाहट में,
कोई न जान पाता है।
कोने में,
कमरे के जाकर,
पोंछकर,
वो सिरा जाने क्यों,
फिर भीग जाता है?

चहल-पहल भी है,
भीड़ भी है,
शोर भी है,
आवाज़ें भी हैं,
और तो और,
गाना बजाना भी है,
फिर जाने क्यों,
कुछ रीता जाता है,
ओढ़नी का सिरा ,
दुबारा से ,
भीग जाता है,
सूख जाता है,
फिर भीग जाता है,..?

उस्ताद

सुनो,
कितना सिखाओगी,
और ऐ ज़िन्दगी!!!
थोड़ा सब्र भी करो,
ज़रा सा रुकना चाहती हूँ,
ठहरना चाहती हूँ,
तुम्हें और करीब से,
देखना चाहती हूँ।
रोज़ नए पाठ,
पढ़ते पढ़ते,
कुछ उलझ सी जाती हूँ।
नहीं है जल्दी मुझे,
नहीं कोई भागमभाग,
नहीं चाहती कोई आला दर्ज़ा,
या कि कोई,
मुकाम हासिल हो मुझे,
नहीं बनना है कोई,
उस्ताद मुझे।
वक्त तो दो जिसमें,
कुछ दुआएँ, कुछ मन्नतें,
कुछ इबादतें कर सकूँ।

प्रेम में..

प्रेम में,
स्वीकारोक्ति है,
मौन तो है जो,
लेकिन प्रकट है।
भिन्न प्रकृति हो,
किन्तु स्वीकार्य है।
मानसिक स्थिति है,
जिसमें अनुभूति है,
लचीलेपन की,
अच्छाई- बुराई,
सही ग़लत का आंकलन तो ,
होता है,
पर दृष्टिकोण रहता है,
केवल स्वीकार्य का।
सम्बन्धों में,
स्निग्धता,
आवश्यक है।
सामंजस्य ऐसा,
जो अतुलनीय, अद्वितीय, असाधारण, अनन्य हो।

मसखरा

हाँ,
मैं मसखरा हूँ।
लगाकर मुखौटा चेहरे पर,
लोगों को हँसाने के लिए,
करता हूँ, करतब,
सुनाता हूँ चुटकुले,
हरकतें उल्टी सीधी करके,
गुदगुदाता हूँ,
मन बहलाता हूँ।
भावनाएँ अपनी छिपाकर,
किसी के लिए,
दो पल खुशियाँ बाँट पाता हूँ।
पर पाता हूँ,
हर इंसान घूम रहा है,
लगाकर मुखौटे कई कई।
बना हुआ है फिर भी,
रसूखदार, रौबदार, असरदार।
पा रहा है मान और सम्मान,
और मुझे कहा जा रहा है,
जोकर या मसखरा।

ईदगाह

चलो,..ईदगाह चलते हैं।
मेला हो मुहब्बत का,
और
दुकानें ईमान की,
भलाई का चिमटा लेने,
चलो,..ईदगाह चलते हैं।
गले मिलें,
भाईचारा हो,
न कोई भूखा हो,
न कोई नंगा हो,
रोटी का निवाला बाँटने,
चलो.. ईदगाह चलते हैं।
जलसे हों,
तराने हों,
सुकून भरी, इबादतें हों,
इक तरन्नुम प्यार का छेड़ने,
चलो,.. ईदगाह चलते हैं।
अमन हो,
चैन हो,
दुश्मनी का ,
नामो निशां न हो,
दोस्ती का पैगाम लेकर,
चलो,.. ईदगाह चलते हैं।
चलो,..ईदगाह चलते हैं।

वो चादर..

सपनों की, ख्वाबों की, यादों की,
वो चादर......।
गीतों की कशीदाकारी,
बातों की तुरपन और मुहब्बत की किनारी,
ओढ़ी थी,
हमने तुमने मिलकर,
वो चादर......।
वक्त गुज़रा, ज़माना गुज़रा,
और गुज़रे अहसास कई।
महफिलें जो सजा करती थीं,
रौनक रोज़ लगा करती थीं,
मकान वो खामोश हुए,
घर भी वो वीरान हुए।
देश भी बदला, घर भी बदला,
रूप भी बदला,वेश भी बदला।
बदली नहीं लेकिन,
वो चादर.....।
हाँ वो चादर,अब तक भी,
हम ओढ़ा करते हैं,
हर रोज़ ही,ओढ़ा करते हैं,
वो चादर..........।

कोई तो इलाज होगा!

मखमली बिछौनों पर,
सोने वाले,
हवा का तापमान नियंत्रित कर,
बड़े महलों में रहने वाले,
अपने अपने स्वर्ग बनाकर,
उसे ही सच मानने वाले,
आधा खाकर,
आधा फैंकने वाले,
नहीं जान पाते,
दूसरी दुनिया का सच,
जहाँ,
तंग गलियों में,
सड़न और सड़ाँध के बीच,
टूटी फूटी खपरैलों में,
हवा की बदबू को,
साँसों से अपनी,
खींचते हुए,
अनगिनत घाव,
शरीर पर लिये,
कोढ़ के समान।
बिना इलाज के,
दम तोड़ते हुए।
नून तेल रोटी के जुगाड़ में,
शरीर के अंगों को बेचते हुए।
लाज और शरम छोड़,
इज़्ज़त नीलाम करते हुए।
सूखी आँतड़ियों को लिए,
लोगों के महल बनाते हुए।
हद तो यह है कि,
जब लाचार, भूखा,
कोई ढूँढ़ता है,
कचरे के ढेर में से,
कुछ खाने के लिए।
कोई तो इलाज होगा जरूर,
इस स्वर्ग और नर्क को,
मिटाने के लिए।
सच को सामने लाने के लिए,
झूठ को न छुपाने के लिए।

रिश्तों के दरमियान...

रिश्तों के दरमियान,
हो गुंजाइश,
ज़रा सा माफ़ करने की,
और
माफ़ी माँगने की,
तो,
तमाशा बनने से
बच सकते हैं वो रिश्ते।
लोगों का क्या?
उन्हें तो आदत होती है,
टूटते हुए को और तोड़ने की।
तिल का ताड़ बनाने की।
राई का,
पहाड़ बनाने की।
चिंगारी को भड़काने की।
जले पर नमक छिड़कने की।
और आग में घी डालने की।

माफ़ करना

कितना आसां है कह देना,
माफ करना गलती को ।
पर कितना मुश्किल है,
माफ़ कर पाना।
टूटते हुए दिल के,
एहसास घेरते हैं,
दिल और दिमाग़ को,
कचोटते हैं,
एक एक करके,
बिखरते हैं
जज़्बात सारे।
बेहोश होते हैं,
कुछ मरते हैं,
और कुछ भटकते हैं,
खोखले रिश्ते साबित होते हैं।
भरोसा टूटने का,
दर्द,
चुभन,
ख्वाबों की गठरियों में से,
रिसते हैं ।
टीस बनकर,
एक एक करके,
हो जाते हैं घाव कई।
तड़पाते हैं,
बेमौसम बारिश,
ओले गिरे हों जैसे।
हाँ,
तब भी,
कुछ जो,
बाकी रहता है ना,
बस,
उस बाकी को,
खत्म न होने देना।
मुश्किल लगेगा,
पर नामुमकिन नहीं।
वहीं ठहर,
घड़ी दो घड़ी, माफ़ी देकर,
फिर बढ़ जाना,
रुकना नहीं।
वक्त की मरहम,
भर देगी,
कितने भी,
गहरे घावों को।
छूटेगा सभी,
रह जाएगा,
वहीं के वहीं।

काले बदरा

काले बदरा,
छाये घटा बन,
रिझाएँ प्यासी धरा को।
नेह की आस,
लिये हो जैसे,
कोई लाचार,
बिरहन।
संयोग अब,
होने को है,
सजन अब,
आने को है,
बरखा अब,
बरसने को है।
शुष्क भू नम हो जाएगी,
गोरी पिया के,
मन को भाएगी,
दूरियाँ सब,
मिट जाएँगी,
व्याकुलता,
अब न रह जाएगी।
हो जाए झूम के,
जो नेह की बारिश.........।

कैसे माफ़ करूँ

जाने कितने,
दुधमुँहे बच्चों के पिता,
सुहागिनों के सुहाग,
माँ की ममता,
घरों के चिराग,
बुझ गये,
शहीद हुए,
देश के प्रहरी,
देश पर मिटे।
कैसे कह दूँ माफ़ करो,
दुश्मन को।
नाज़ुक सी कलियाँ,
कुचली गईं,
हैवानियत का,
शिकार हुईं,
भेड़ियों के द्वारा,
नोच ली गईं,
घर में भी,
बाहर भी,
बेइज्जत हुईं,
रिश्तों से भी
ठगी गईं,
कुछ कोख में ही,
मारी गईं,
कैसे कह दूँ माफ़ करो,
राक्षसों को।
देश लुटता,
जा रहा,
बुद्धिमान
पिसता जा रहा,
आरक्षण ,
पूरे जीवन को,
दीमक का सा खा रहा,
कानून भी ,
बलि चढ़ रहा,
भ्रष्टाचार का मकड़जाल,
हर तरफ है छा रहा,
कैसे कह दूँ माफ़ करो,
घर में ही,
पल रहे साँपों को।
कैसे कह दूँ माफ़ करो,
दरिंदों को,
पापियों को,
गुनहगारों को।

खुशी के गीत

लिख देती हूँ,
अनुभूतियों के पल।
त्योहारों की उमंग।
प्रकृति के अद्भुत दृश्यों का,
सजीव चित्र खींच देती हूँ,
रचना में अपनी।
आशा के गीत जो रच पाती हूँ,
सँभालकर अपना टूटा मन,
चाहती हूँ कि चुभ न पाए वो दंश,
जो कभी महसूस किये होंगे लिखने से पहले।
बुरे वक्त को जीया होगा दोबारा।
सोचती हूँ परदे में ही रहें वो ,
लेकिन निकल ही आते हैं,
भरी हुई गगरी में से,
पानी छलकता हो जैसे।
जानती हूँ तन रहे न रहे,
एहसास जिंदा रहते हैं,
शब्द भी साँस लेते हैं।
तो फिर क्यूँ न शुरुआत ऐसी करूँ कि,
एहसास जो बचें,
वो बचें सिर्फ खुशी के।
न हो ग़म कोई, गाएँ सब झूम के।
सुख दुःख तो बादल हैं,
आते हैं, छँट जाते हैं।
लिखूँ गीत खुशी के सब कुछ भूल के।

इबादत

कदम दर कदम,
टूटते,बिखरते,
रिश्ते, अहसास, भरोसे।
बेजान सी रूह को,
मिलता सहारा,
इबादत के वो पल,
दे जाते सुकून घड़ी भर को।
करोड़ों की भीड़,
खोने का डर, वहम ही है।
पाया जो अब तलक,
वो अपना नहीं,
हकीकत है ये, कोई सपना नहीं।
लम्हा-लम्हा, गुज़रती जा रही जिन्दगी,
अँधेरे में ही,
कटती जा रही जिन्दगी।
उदासियों और खामोशियों से निकलकर,
ज़रा सी कोशिश हो अगर,
रोशनी की दलहीज पर,
पड़ जाए गर कदम,
रूखी सूखी काया,
जो पड़ी रही ताउम्र मोह माया।
पा जाए आराम,
फासला भी हो कम,
साथ हो दुआएँ, कुछ घट जाएँ ग़म।
चलो इबादत के रास्ते ही, खोज लें नई सुबह।

प्रेम है या...

प्रेम,
कहाँ मानता है,
और सुनता है,
कोई नियम, कायदा या कानून,
ना ही बँध पाता है,
सीमाओं में,
दायरों में।
तो उड़ने दो ना उसे,
उन्मुक्त,
आज़ाद पंछी की तरह।
निश्छल, निर्मल
सरिता सा पाक, साफ़,
पवित्र होता है,
किसी दुआ,
विनती और प्रार्थना सा।
सुनो,
प्रेम से बढ़कर कुछ भी नहीं,
पर अन्तर कर लेना,
प्रेम और वासना में।

कुछ सुना...

सुनो,
ये काजल, बिन्दी, गजरा,
पायल, मेहंदी,
चूड़ियाँ, इत्र, महावर,
बिछिया, अँगूठियाँ,
टीका, मंगलसूत्र,
होंठों की लाली,
कानों की बाली,
करधनी और बाजूबंद,
लाल रंग की साड़ी,
कुछ कहती है,
याद दिलाती है,
गुनगुना कर बतलाती है,
ये सारे श्रृंगार, तुम्हारे लिए हैं,
कठिन, सरल, कँटीला या पथरीला,
जीवन का पथ , चाहे जैसा रहा हो,
हम दोनों संग थे, संग ही रहेंगे,
चाँद और करवा माँ से माँगा है आशीष,
भरूँ में माँग में सिन्दूर तुम्हारे नाम का,
सदा ही।
प्रेम और स्नेह तुम्हारा मिलता रहे ,
घर आँगन हमारा महकता रहे,
नेह का ये बन्धन चिरंजीवी रहे,
सुनो, तुमने कुछ सुना????

सूना सूना कोना

कोने में रखा हुआ गुलदान,
उस कोने के समान ही सूना सूना।
जैसे अरसे से फूलों से सजाया नहीं,
धूल भी जमी हुई,
अंदर, बाहर , ऊपर, नीचे।
शान और शौकत भी खो चुका है अब।
कबाड़ माना गया तो फिंक जाएगा।
कद्र हो गई तो चमकाया जाएगा।
शुक्र है अरसे बाद,
इस दीवाली धूल को हटाया गया,
ऊपर, नीचे, अंदर, बाहर से।
सुनहरी यादों के समान,
ताज़े फूलों से सजाया गया।
घर के चबूतरे पर तो रौनक होगी ही,
पटाखों से मोहल्ला भी करेगा शोर।
पर क्या वह कोना गुलदान वाला,
अब भी रहेगा सूना,
या फिर,
गुलाब या गुलहड़ से सजाया जाएगा।
काश,
फूलों के साथ साथ,
एक दीपक भी जला दिया जाए,
तो रौशन हो जाए वह सुन्दर सा कोना।
उदासी और सूनापन छोड़ ,
खिलखिला दे, मुस्कुरा दे वह कोना.......।

सराहना

बचपन,
जवानी,
या बुढ़ापा,
अपने,
खिलौनों की, दोस्तों की, कार्यों की,
पसन्द की, घर की, सजावट की,
खरीदारी की, कला की, रुचि की,
रूप रंग की, व्यवहार की, आचरण की,
संस्कारों की, बुद्धिमानी की,चतुरता की,
ज्ञान की, भक्ति की,
सराहना पाकर,
हर कोई कर जाता है,
असंभव सा दिखने वाला कार्य भी,
बड़ी सरलता से।
दो बोल सराहना के,
भर देते हैं,
ऊर्जा कई गुना।
पर अंतर कर लेना,
सराहना,
और,
चाटुकारिता में।

भाग्य

सुनो,
तुम जिसे भाग्य कहते हो ना,
मैं उसे कर्म फल कहती हूँ।
कर्म के फल के बल से,
कोई भी नहीं बच सकता है।
सुनो,
कर्म जो है ना,
वह कभी भी पता नहीं भूलता,
जन्म दर जन्म जुड़ता भी जाता है,
तुम जिसे भाग्य, किस्मत,
विधि का विधान, होनहार, भवितव्य कहते हो ना,
वो पुराने, नये और पहले से जुड़े हुए,
कर्मों का फल ही है।
इसलिए यदि सब कुछ अच्छा अच्छा ही मिल रहा है,
तो भाग्य पर मत इतराना,
आगे भी अच्छा हो ,
तो कर्म पर ध्यान देना।
और यदि अच्छा ना हो रहा हो तो,
पिछले कर्मों का फल समझना,
अभी भी कर्म पर ही ध्यान देना सतर्क होकर,
क्योंकि आगे भी मिलेगा तो वही,
जैसा कर्म पहले किया होगा।
सुनो,
तुम जरूर ध्यान देना इस संदेश पर।

दीवार

सुनो!
घर की चारदीवारी में रहकर भी,
मैंने कोई शिकायत नहीं की तुमसे कभी।
हाँ!
कोसा है लेकिन कई बार घड़ी को।
तब,
जब काटे नहीं कटता था समय।
अनजाने में ही,
ख़ुद खींच दी लक्ष्मण रेखा,
चौखट पर अपने घर की।
बेशक पहले पहल थी कुछ परेशान।
फिर दोस्ती कर ली,
दीवारों से,
छत से,
दरवाजों, खिड़कियों,
और रौशनदानों से।
समय ने भी घुटने टेक दिए,
अब दीवारें,सज गई हैं,
इनामों और इज्जतनामों से,
कैसे???
तुम बखूबी जानते हो,
बेइंतहा मुश्किल दौर से निकलकर,
यहाँ तक के सफ़र को,
फिर क्यों बताऊँ ?????

प्रस्फुटन

जानते हो,
मन में उठती थीं तरंगें पहले भी,
भिन्न भिन्न व्यास की,
किन्तु सदैव ही कटी छँटी सी।
भावों का केंद्र बिन्दु तो था,
पूर्व में भी।
किन्तु सदा ही,
स्थान बदलता रहा।
तुम माध्यम बने,
माध्यम तो नहीं,
वो प्रकार बने,
जिसके ठोस सहारा मिलने पर,
भावों की तरंगें,
निश्चित व्यास पर,
निश्चित बिन्दु पर केंद्रित हो गईं।
प्रस्फुटन हुआ तब,
अनेकों वृत्ताकार का,
भिन्न भिन्न त्रिज्या और परिधि के।
स्वयं आनंदित हो, अन्य को भी प्रसन्न किया,
उन तरंगों ने।
सुनो,
कृतज्ञ हूँ मैं तुम्हें पाकर।

ताकत

जानते हो,
किसी से नकारे जाने पर,
तवज्जो न मिलने पर,
अहसास होता है मुझे,
कुछ ज्यादा,
अपनी ताकत का।
हाँ अपनी ताकत का।
भरोसा भी होता है,
कुछ ज्यादा,
ऊपर वाले का।
सुनो,
अब यदि कोई,
तुम्हारी कीमत न समझे तो,
मान लेना,
उसकी औकात ही नहीं,
तुम तक पहुंचने की।
और तुम उदास मत होना,
परेशान भी मत होना,
बस भरोसा करना ,
अपनी ताकत का,
और ऊपर वाले का।

वो दृश्य

वो दृश्य जो चित्रित हुए,
मन के कोरे पृष्ठों पर।
नभ की लालिमा में ,
झाँक रही,
दिनकर की रश्मियाँ ,
विहंगम सी।
तुम लगे अप्रतिम ,
पीताम्बरी कान्हा से,
मैं मनचली,
बावरी राधा सी।
बंद नयनों में,
तुम अनुभूत हुए,
बजी चहुँ ओर,
राग रागिनी सी।
अंकित उस छवि,
पर मुग्ध हुई,
मन पलाश और,
तन गुलाब हुआ,
तुम मेघ घने,
छाए मुझ पर,
मैं बरस गई तब बारिश सी।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - पिंकी परुथी 'अनामिका'

जन्म - 22.10.1970

माता-पिता - श्रीमती निशा तनेजा - श्री हरीशचंद्र जी तनेजा

पति - डॉ. पंकज परुथी

शिक्षा - बी.ई. (इलेक्ट्रिकल 1991)

कार्यक्षेत्र - गृहिणी, समाज सेविका (महिला साक्षरता एवं बाल कल्याण एवं जरुरतमंद मरीजों के लिए कार्यरत्), लेखिका (सभी विधाओं में)

पता - pp.pinky97@gmail.com

ईमेल - डॉ. पंकज परुथी, कोटा रोड, बारां राजस्थान - 325205

मो.नं. - 9414257474

प्रकाशन - साझा संकलन

1. जे.एम.डी. प्रकाशन - नारी काव्य सागर (काव्य संग्रह), हिन्दी सागर (काव्य संग्रह)
2. अर्णव कलश एसोसिएशन - सुगंध परिवेश की (काव्य संग्रह)
3. के.बी.एस. प्रकाशन - अपूर्वा (गीत-नवगीत संग्रह), विचार मंथन (आलेख संग्रह) एवं स्पंदन (काव्य संग्रह)
4. नूतन साहित्य कुंज - कुंज निनाद (काव्य संग्रह), मनोभाव (काव्य संकलन), अखिल भारतीय साहित्य परिषद, राजस्थान (बारां), वूमेंस आवास (काव्य संकलन), अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन, सृजक सृजन समीक्षा(एकल पुस्तक), आधी आबादी का सम्पूर्ण राग (साझा काव्य संग्रह), अपनी शान है तिरंगा (साझा काव्य संग्रह), मै आल्हादिनी (एकल काव्य संग्रह) पत्रिका ब्यूरो (बारां), लोकजंग (भोपाल), वर्तमान अंकुर (नोएडा),डालटा एक्सप्रेस (गाज़ियाबाद) एवं अन्य 80 से अधिक रचनाएं प्रकाशित (डेढ़ वर्ष में)।

सम्मान

1. विश्व हिन्दी रचनाकार मंच द्वारा - श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान 2017।
2. अर्णव कलश एसोसिएशन द्वारा - पं.माधव प्रसाद मिश्र कलम सौगंध सम्मान।
3. मातृभाषा उन्नयन संस्थान एवं अंतरा शब्द शक्ति द्वारा अंतरा शब्द शक्ति सम्मान ।
4. मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा - भाषा सारथी सम्मान ।
5. काव्यांचल द्वारा - काव्य मेघ सम्मान एवं काव्य शिखर सम्मान।
6. वूमेन्स एचीवर अवार्ड 2018- एंटी करप्शन फाउंडेशन ऑफ इंडिया के द्वारा ।
7. वूमन आवाज सम्मान- 2018, अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन द्वारा।
8. हिन्दी साहित्यश्री सम्मान - अवर्ण कलश एसोसिएशन द्वारा
9. डॉ. महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान 2018 - पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी द्वारा।
10. नारी सागर सम्मान 2018 - जे.एम.डी. पब्लिकेशन द्वारा ।
11. हिन्दी प्रचारिणी सभा बांरा द्वारा हिन्दी भाषा के विकास और उत्थान के लिए सम्मान।
12. साहित्य भूषण सम्मान 2018 - काव्य रंगोली परिवार द्वारा

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-79-7

मूल्य 55/-